दैनिक भास्कर
रांची 13-04-2023

सीयूजे में पद्मश्री उमाशंकर पांडेय ने कहा- 'जल ही जगदीश'

ग्राउंड वाटर इन्वेस्टिगेशन विषय पर वर्कशॉप शुरू

एजुकेशन रिपोर्टर | रांची

पद्मश्री उमा शंकर पांडेय ने कहा-जल ही जगदीश है, इसलिए पानी का उपयोग बुद्धिमानी से करें। वे बुधवार को सेंट्रल यूनिवर्सिटी झारखंड (सीयूजे) में तीन दिवसीय वर्कशॉप के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे। इसका विषय जियोइन्फॉर्मेटिक्स एंड इलेक्ट्रिकल रेसिस्टिविटी टेक्निक्स इन ग्राउंड वाटर इन्वेस्टिगेशन है। सीयूजे, इंडियन सोसाइटी ऑफ जियोमैटिक्स और जियोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यक्रम में पद्मश्री ने पानी के सांस्कृतिक महत्व पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। आयोजन में डॉ. अमित कुमार, डॉ. बीआर परिदा, डॉ. किरण जालम, डॉ. कन्हैया लाल, डॉ. बशीर केके, डॉ. सूरज, डॉ. अर्पिता, डॉ. संदीप्ता का योगदान है।

प्रबंधन कर भूजल स्तर बढ़ाएं

सीयूजे के वीसी प्रो. केबी दास ने कहा-पानी महत्वपूर्ण संसाधन है। संरक्षण और बेहतर प्रबंधन कर भूजल स्तर बढ़ाना होगा। सीजीडब्ल्यूबी कोलकाता के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अनादि गायेन, एसईआरबी-डीएसटी वैज्ञानिक डॉ. प्रह्लाद राम, प्रो. संदीप सिंह, टीबीएन सिंह, प्रो. एसी पांडेय, डॉ. सीएस द्विवेदी आदि ने विचार रखे।

केंद्रीय विश्वविद्यालय में भूगर्भ जल पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

प्रातः आवाज

रांची : जियोइन्फॉर्मेटिक्स एंड इलेक्ट्रिकल रेसिस्टिविटी टेक्निक्स इन ग्राउंडवाटर इन्वेस्टिगेशन्स विषय पर जियोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग द्वारा केन्द्रीय विश्वविद्यालय झारखंड में तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम की शुरूआत 12 अप्रैल से 14 अप्रैल तक संपन्न हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर केवी दास ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को कृषि क्षेत्र में आई आधुनिक तकनीकों से परिचय करवाना और इस विषय पर आगे रिसर्च करने के लिए प्रेरित करना है। साथ ही यह बताना कि तकनीक का इस्तेमाल कर भूजल को कैसे प्राप्त किया जाए। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि प्रताप सिंह परिहार पूर्व निदेशक एटॉमिक मिनिरल डिवीजन भारत सरकार थे एवं कार्यक्रम के समापन सत्र में में मुख्य अतिथि डॉ देवाशीष मिश्रा ग्रुप डायरेक्टर इसरो ने व्याख्यान देते हुए बताया कि पानी इस धरती की सबसे बहुमूल्य वस्तु हैं। जल के बिना जिंदगी संभव नहीं है। डॉ. सीमा सिंह सामाजिक कार्यकर्ता ने बताया की कृषि क्षेत्र में सिंचाई के लिए भूजल ही सबसे अच्छा स्त्रोत है। इस दौर में भूजल का पता लगाना बड़ी मुश्किल है। इसके लिए हमलोग तकनीक का इस्तेमाल करके लोगों का जीवन सुलभ किया जा सकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर विजय सिंह ने बताया कि भारत के पथरीले इलाकों में भूजल की परिस्थिति के बारे में बताया एवं झारखंड प्रदेश के भूगर्भ जल के ऊपर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पत्थरीले इलाकों में भूजल का सबसे संकट होता है। जिसके लिए वहां के रहवासियों को पानी के लिए काफी भटकना पड़ता है। तकनीक के इस दौर में अगर तकनीक का प्रयोग कर भूजल का पता लगाया जाए तो लोगों को ज्यादा भटना नहीं पड़ेगा।

भूजल स्तर को बढ़ाने के लिए जल संरक्षण व प्रबंधन जरूरी

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

भारत के लिए पानी अहम संसाधन है, इसलिए भूजल स्तर को बढ़ाने के लिए भी इसका उचित संरक्षण और प्रबंधन करने की आवश्यकता है. यह बात सीयूजे के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने कही. वह बुधवार को विवि में सीयूजे और इंडियन सोसाइटी ऑफ जियोमैटिक्स, रांची चैप्टर के भूगोल और जियोइंफार्मेटिक्स विभाग के तीन दिवसीय संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में बोल रहे थे. कार्यक्रम का विषय जियोइंर्फेटिक्स . एंड इलेक्ट्रिकल रेसिस्टिविटी टेक्निक्स इन ग्राउंडवाटर इन्वेस्टिगेशन था. मौके पर पद्मश्री उमा शंकर पांडेय ने कहा कि जल ही जगदीश है. उन्होंने पानी के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला और लोगों को पानी बचाने और इसका बुद्धिमानी से उपयोग करने का आग्रह किया. कार्यक्रम में सीजीडब्ल्यूबी कोलकाता के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अनादि गायेन और एसइआरबी-डीएसटी नयी दिल्ली के वैज्ञानिक डॉ प्रह्लाद राम ने भी अपने विचार रखे. स्वागत भूगोल विभाग के समन्वयक डॉ सीएस द्विवेदी ने किया. इस अवसर पर भू-विज्ञान विभाग आइआइटी रूड़की के प्रो संदीप सिंह, टीबीएन सिंह, डीन प्रो एसी पांडेय, डॉ अमित कुमार, डॉ बीआर परिदा, डॉ किरण जालम, डॉ कन्हैया लाल, डॉ बशीर केके, डॉ सूरज, डॉ अर्पिता और डॉ संदीप्ता आदि उपस्थित थे.

रिसर्च्स, एमआरपीएल, लेमन ट्री, 5000 रुपए चेक से सम्मानित भी किया गया।

भू-जल स्तर बढ़ाने के लिए भी संरक्षण व प्रबंधन की जरूरत

सीयूजे में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल विशेषज्ञ व छात्र • जागरण

जासं, रांची : सेंट्रल यूनिवर्सिटी आफ झारखंड में जियोइंफार्मेटिक्स एंड इलेक्ट्रिकल रेसिस्टिविटी टेक्निक्स इन ग्राउंडवाटर इन्वेस्टिगेशंस... विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह आयोजन सीयूजे और इंडियन सोसाइटी आफ जियोमैटिक्स रांची चैप्टर के भूगोल और जियोइंफार्मेटिक्स विभागों ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम का उदघाटन 12 अप्रैल को किया गया जो कि 14 अप्रैल तक जारी रहेगा। सीयूजे के कुलपति प्रो केबी दास कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि देश के लिए पानी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। न केवल इस दुर्लभ संसाधनों के संरक्षण के लिए बल्कि भू-जल स्तर को बढ़ाने के लिए भी इसका उचित संरक्षण और प्रबंधन आवश्यक है। कार्यक्रम का मुख्य उद्बोधन पद्मश्री उमा शंकर पांडेय ने दिया। उन्होंने पानी के सांस्कृतिक महत्व के बारे जानकारी दी। पानी बचाने और बुद्धिमानी से उपयोग का आग्रह किया। कार्यक्रम में सीजीडब्ल्यूबी कोलकाता के क्षेत्रीय निदेशक डा. अनादि गायेन और एसईआरबी-डीएसटी नई दिल्ली के विज्ञानी डा प्रह्लाद राम कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। प्रो संदीप सिंह और टीबीएन सिंह ने नई दिल्ली से सम्मानित अतिथि की भूमिका निभाई।

इनका रहा सहयोग

कार्यक्रम संयोजक रूप में प्रो एसी पांडेय (डीन, एसएनआरएम) उपस्थित रहे। शुरुआत भूगोल विभाग के समन्वयक डा सीएस द्विवेदी ने की। कार्यक्रम में डा अमित कुमार, डा बीआर परिदा, डा किरण जालम, डा कन्हैया लाल, डा बशीर केके, डा सूरज, डा अर्पिता और डा संदीप्ता मुख्य रूप से शामिल हुए। सभी के सहयोग और उपस्थिति से कार्यक्रम सफलतापूर्वक हुआ।

भूजल स्तर बढ़ाने पर मंथन

रांची, प्रमुख संवाददाता। केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड (सीयूजे) में भूजल जांच में भू-सूचना विज्ञान और विद्युत प्रतिरोधकता तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण बुधवार को शुरू हुआ। यह आयोजन सीयूजे और इंडियन सोसाइटी ऑफ जियोमैटिक्स रांची चैप्टर के भूगोल और जियोइन्फॉर्मेटिक्स विभागों की ओर से हो रहा है।

कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने भूजल के स्तर को बढ़ाने के लिए इसके संरक्षण व प्रबंधन पर जोर दिया। पद्मश्री उमाशंकर पांडेय ने पानी बचाने व इसका बुद्धिमानी से उपयोग करने की अपील की।

सीयूजे में भूगर्भ जल खोज पर प्रशिक्षण

रांची. सीयूजे में जियोइनफॉर्मेटिक्स विभाग के तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुक्रवार को समापन हो गया. इसका विषय जियोइनफार्मेटिक्स एंड इलेक्ट्रिकल रेजिस्टिविटी टेक्निक इन ग्राउंडवाटर इनवेस्टिगेशन था. इस मौके पर विवि के कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को कृषि क्षेत्र में आयी आधुनिक तकनीकों से परिचित कराना है. साथ ही इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित करना और इस तकनीक का इस्तेमाल कर भूजल प्राप्त करने के तरीके ढूंढ़ना है. सामाजिक कार्यकर्ता डॉ सीमा सिंह ने कहा कि कृषि क्षेत्र में सिंचाई के लिए भूजल ही सबसे अच्छा स्त्रोत है. इस दौर में भूजल का पता लगाना बहुत मुश्किल हो गया है. प्रो विजय सिंह ने पथरीले इलाकों में भूजल की परिस्थिति के बारे में बताया. एनआइटी रायपुर के हाइड्रोज़ियोलॉजिस्ट डॉ डालचंद झारिया ने प्रशिक्षणार्थियों को रिमोट सेंसिंग के बारे में बताया.

सीयूजे: तकनीक के इस्तेमाल से भूजल प्राप्त करने पर हुई चर्चा

रांची। केंद्रीय विवि झारखंड में जियोइन्फॉर्मेटिक्स एंड इलेक्ट्रिकल रेसिस्टिविटी टेक्निक्स इन ग्राउंडवाटर इन्वेस्टिगेशन्स पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विवि के कुलपति ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को कृषि क्षेत्र में आई आधुनिक तकनीकों से परिचय करवाना और इस विषय पर आगे रिसर्च करने के लिए प्रेरित करना है। मुख्य अतिथि ग्रुप डायरेक्टर इसरो डॉ. देवाशीष मिश्रा ने बताया कि पानी इस धरती की सबसे बहुमूल्य वस्तु हैं। जल के बिना जिंदगी संभव नहीं है।

ों को आकर्षित कर रहे थे।
के स्टॉल का नेतृत्व सौरव

युद्ध का दृश्य था। स्किट में त्रि
ऋचा, आदित्य, आयुष और सुमि

सीयूजे में तकनीक से भूजल को प्राप्त करने पर किया गया मंथन

रांची। केंद्रीय विश्वविद्यालय झारखंड (सीयूजे) के जियोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग की ओर से भूजल पर आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का समापन शुक्रवार को हुआ। समापन सत्र में कुलपति प्रो क्षिति भूषण दास ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को कृषि क्षेत्र में आई आधुनिक तकनीकों से परिचय करवाना और इस विषय पर आगे अनुसंधान करने के लिए प्रेरित करना था। साथ ही, यह बताना कि तकनीक का इस्तेमाल कर भूजल को कैसे प्राप्त किया जाए।

मुख्य अतिथि डॉ देवाशीष मिश्रा, ग्रुप डायरेक्टर इसरो, ने बताया कि पानी इस धरती की सबसे बहुमूल्य वस्तु है। जल के बिना जिंदगी संभव नहीं है। सामाजिक कार्यकर्ता डॉ सीमा सिंह ने कहा कि कृषि क्षेत्र में सिंचाई के लिए भूजल ही सबसे अच्छा स्रोत है। प्रोफेसर विजय सिंह ने भारत के पथरीले इलाकों में भूजल की परिस्थिति के बारे में बताया साथ ही उन्होंने झारखंड के भूगर्भ जल पर चर्चा की।

रांची के 54% स्कू

रांची, वरीय संवाददाता। मध्याह्न भोजन को